JIRMI

Journal of International Research and Multidisciplinary Innovation

मौन की सैद्धांतिकी और अपोफैटिक (Apophatic) भाषा-दर्शन: अज्ञेय की काव्यात्मक अभिव्यंजना

लेखक	अधिवक्ता अवनीशकुमार जे. यादव
संबद्ध संस्थान	महाराष्ट्र नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, मुंबई
ईमेल	avanish@lynxlegal.in
प्रस्तुत पत्रिका	जर्नल ऑफ इंटरनेशनल रिसर्च एंड मल्टीडिसिप्लिनरी इनोवेशन (JIRMI)
प्रस्तुति तिथि	२१ मार्च २०२६

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र आधुनिक हिंदी साहित्य के मूर्धन्य कवि, कथाकार और विचारक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के विपुल काव्य-संसार में अंतर्निहित 'मौन की सैद्धांतिकी' (Theory of Silence) और 'अपोफैटिक भाषा-दर्शन' (Apophatic Philosophy of Language) का एक सांगोपांग, अंतःविषयक और तात्विक अन्वेषण प्रस्तुत करता है। समकालीन विमर्शों में भाषा की बढ़ती वाचालता, अर्थ-पतन और उपभोक्तावादी शोर के संकट के विरुद्ध अज्ञेय ने 'मौन' को एक सशक्त दार्शनिक और काव्यात्मक उपकरण के रूप में स्थापित किया है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि किस प्रकार अज्ञेय का भाषा-दर्शन भारतीय उपनिषदों की 'नेति-नेति' (निषेधात्मक मीमांसा) परंपरा, बौद्ध धर्म के शून्यवाद व क्षणिकवाद तथा पाश्चात्य अस्तित्ववाद, घटनाविज्ञान (Phenomenology) और लुडविग विट्गेन्स्टाइन के भाषाई मौन के सिद्धांतों के साथ एक गहन तादात्म्य स्थापित करता है। शोध प्रणाली के अंतर्गत अज्ञेय की प्रतिनिधि दीर्घ कविताओं—विशेषकर 'असाध्य वीणा', 'हरी घास पर क्षण भर', और विविध प्रकृति-केंद्रित कृतियों—का सूक्ष्म पाठ्यपरक (Textual) और दार्शनिक विखंडन किया गया है। मुख्य निष्कर्ष यह प्रमाणित करते हैं कि अज्ञेय के साहित्य में मौन कोई निष्क्रिय रिक्ति, संवेदनात्मक शून्यता या पलायनवादी चुप्पी नहीं है, बल्कि वह चेतना का वह चरम और उर्वर बिंदु है जहाँ पहुँचकर विषय (Subject) और वस्तु (Object) का द्वैत पूरी तरह समाप्त हो जाता है और 'अहं' के पूर्ण विसर्जन से उस अतीन्द्रिय, अखंड और अनिर्वचनीय सत्य का साक्षात्कार होता है जिसे पारंपरिक वाचाल भाषा अभिव्यक्त करने में सर्वथा असमर्थ है। यह शोध अंततः यह स्थापित करता है कि अज्ञेय का अपोफैटिक भाषा-दर्शन 'न कहने' के शिल्प के माध्यम से

ही 'सब कुछ कह देने' की अनूठी वैश्विक काव्य-कला का सृजन करता है।

बीज शब्द (Keywords): अज्ञेय, मौन की सैद्धांतिकी, अपोफैटिक भाषा-दर्शन, नेति-नेति, शून्यवाद, अद्वैत वेदांत, असाध्य वीणा, घटनाविज्ञान।

१. प्रस्तावना: समकालीन भाषा का संकट और मौन की दार्शनिक आवश्यकता

बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध मानवीय ज्ञान, विज्ञान, यांत्रिकता और संचार क्रांति के अभूतपूर्व विकास का साक्षी रहा है। तथापि, विडंबना यह है कि ज्यों-ज्यों मनुष्य के पास अभिव्यक्ति के साधन बढ़ते गए, त्यों-त्यों उसकी भाषा अपनी आंतरिक संवेदनात्मक गहराई और अर्थवत्ता खोती चली गई [1]। पूंजीवादी उपभोक्तावाद और आधुनिक नागर जीवन की कृत्रिमता ने शब्दों को एक ऐसी वाचालता और 'साबुन की चिकनाई' में रूपांतरित कर दिया है, जहाँ शब्द सत्य को उद्घाटित करने के बजाय उस पर भ्रम का आवरण डालने लगे हैं । इस गंभीर भाषाई और संवेदनात्मक संकट के संक्रमण काल में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का उदय हिंदी साहित्य पटल पर एक ऐसे सत्यान्वेषी और विचारक के रूप में हुआ, जिन्होंने भाषा की इन संरचनात्मक और ओंटोलॉजिकल (Ontological) सीमाओं को अत्यंत सूक्ष्मता से पहचाना ।

अज्ञेय का संपूर्ण रचना-संसार केवल शब्दों का कलात्मक विन्यास मात्र नहीं है; यह वास्तव में 'शब्द' की सार्थकता और 'मौन' की अनंत संभावनाओं के बीच चलने वाला एक सुदीर्घ दार्शनिक विमर्श है [3]। अज्ञेय ने यह भली-भांति समझ लिया था कि मानवीय अनुभव के कुछ ऐसे चरम और गहनतम क्षण होते हैं—जैसे चरम वेदना, गहन प्रेम, कलात्मक सृजन, और आध्यात्मिक साक्षात—जहाँ पहुँचकर पारंपरिक भाषा पूरी तरह पंगु और असमर्थ हो जाती है [2]। इन अतीन्द्रिय और अनिर्वचनीय अवस्थाओं को अभिव्यक्त करने के लिए अज्ञेय ने एक ऐसी नवीन काव्य-भाषा का विकास किया, जो वाचालता का निषेध करती है और 'मौन' को ही अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त, मुखर और प्रामाणिक माध्यम स्वीकार करती है ।

प्रस्तुत शोध पत्र अज्ञेय के काव्य और वैचारिक गद्य में अंतर्निहित इसी 'मौन की सैद्धांतिकी' और 'अपोफैटिक भाषा-दर्शन' का अत्यंत सूक्ष्म, व्यापक और बहुआयामी विश्लेषण करने का प्रयास करता है। अपोफैटिक दर्शन (Apophatic Philosophy), जिसे मूलतः निषेधात्मक विमर्श या *via negativa* के रूप में जाना जाता है, सत्य के उस स्वरूप को उद्घाटित करता है जिसे किसी भी सकारात्मक परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता । अज्ञेय का यह दर्शन न केवल भारतीय मनीषा की उपनिषदीय 'नेति-नेति' परंपरा और बौद्ध शून्यवाद [7] से अनुप्राणित है, बल्कि यह पाश्चात्य घटनाविज्ञान, अस्तित्ववाद [8] और विट्गेन्स्टाइन के भाषा-दर्शन के साथ भी एक अपूर्व दार्शनिक संवाद स्थापित करता है। यह शोध स्थापित करेगा कि अज्ञेय का 'मौन' कोई शून्य या अभाव नहीं है, बल्कि वह अर्थ की सघनतम उपस्थिति है ।

२. अपोफैटिक (Apophatic) चिंतन और उपनिषदीय 'नेति-नेति' का तादात्म्य

२.१ अपोफैटिक दर्शन (*Via Negativa*) का दार्शनिक आधार

अपोफैटिक दर्शन (Apophatic Philosophy or Theology) की उत्पत्ति मूलतः पाश्चात्य रहस्यवादी और धार्मिक विमर्शों में हुई, जहाँ यह माना गया कि ईश्वर या परम सत्य मानवीय बुद्धि, तर्क और भाषा की संकीर्ण परिधि से पूर्णतः परे है । इस चिंतन के अनुसार, परम वास्तविकता को किसी भी सकारात्मक विशेषण (Kataphatic description) द्वारा परिभाषित करने का कोई भी प्रयास अनिवार्यतः उसे संकुचित और खंडित कर देता है । उदाहरणस्वरूप, यदि हम कहें कि "ईश्वर दयालु है" या "सत्य सुंदर है", तो हम 'दया' और 'सौंदर्य' की अपनी सीमित मानवीय अवधारणाओं को उस असीम सत्ता पर आरोपित कर देते हैं [9]। अतः, अपोफैटिक पद्धति यह प्रतिपादित करती है कि परम सत्य का वर्णन केवल निषेध की प्रक्रिया (Process of negation) के माध्यम से ही किया जा सकता है—अर्थात, वह 'क्या नहीं है' (वह असीम नहीं है, वह

नश्वर नहीं है, वह बुद्धिग्राह्य नहीं है) ।

२.२ उपनिषदीय 'नेति-नेति' और अज्ञेय की ज्ञानमीमांसा

भारतीय दर्शन की अद्वैत वेदांत परंपरा में इस निषेधात्मक मीमांसा का चरमोत्कर्ष बृहदारण्यक उपनिषद के प्रसिद्ध सूत्र 'नेति-नेति' (न-इति, न-इति अर्थात यह भी नहीं, वह भी नहीं) में प्राप्त होता है । आचार्य शंकर के अद्वैतवाद के अनुसार, ब्रह्म सर्वव्यापी, निराकार और अनिर्वचनीय है, जिसे केवल 'अविद्या' या 'माया' के आवरण को हटाकर ही अनुभूत किया जा सकता है [10]। अज्ञेय की ज्ञानमीमांसा (Epistemology) इसी 'नेति-नेति' के दार्शनिक धरातल पर निर्मित हुई है । अज्ञेयवाद (Agnosticism) के ऐतिहासिक विकास को देखें, तो थॉमस हेनरी हक्सले द्वारा १८६९ में प्रतिपादित यह सिद्धांत कि "परम सत्य मानवीय इंद्रियों और तर्क के लिए अज्ञेय है", अज्ञेय के साहित्यिक नामकरण और उनकी वैचारिक खोज का मुख्य प्रेरक बिंदु बनता है [9]।

अज्ञेय ने अपने निबंधों में यह स्पष्ट किया कि सत्य की खोज कभी भी किसी अंतिम गंतव्य पर पहुँचकर समाप्त नहीं होती, बल्कि वह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है [13]। उपनिषदों की भाँति, अज्ञेय भी मानते हैं कि जिस सत्य को वाणी द्वारा पूर्णतः कह दिया गया, वह सत्य अपनी प्रामाणिकता खो देता है । जैसा कि केनोपनिषद में कहा गया है:

यतो वाचा निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह

अर्थात, जहाँ से वाणी मन सहित बिना प्राप्त किए लौट आती है, वही ब्रह्म है । अज्ञेय का काव्य इसी अनिर्वचनीयता का अन्वेषण है [3]। वे अपने शब्दों को इस प्रकार तराशते हैं कि वे पाठक को सीधे अर्थ देने के बजाय, उस मौन की ओर संकेत करें जहाँ सत्य स्वतः स्फूर्त रूप से उद्घाटित होता है [13]।

३. बौद्ध शून्यवाद, अद्वैत वेदांत और अज्ञेय का ज्ञानमीमांसीय समन्वय

३.१ शून्यवाद और अद्वैत वेदांत का सैद्धांतिक विमर्श

अज्ञेय की दार्शनिक चेतना पर जितना गहरा प्रभाव अद्वैत वेदांत का है, उतना ही सशक्त प्रभाव बौद्ध धर्म के 'माध्यमिक शून्यवाद' का भी है [7]। आचार्य नागार्जुन द्वारा प्रतिपादित शून्यवाद (Madhyamaka Shunyavada) यह मानता है कि संसार की सभी घटनाएँ या पदार्थ 'प्रतीत्यसमुत्पाद' (Dependent Origination) पर आधारित हैं, अर्थात उनका अपना कोई स्वतंत्र और स्थायी सार (Svabhava) नहीं है; वे 'शून्य' हैं [7]। नागार्जुन ने सत्य को दो स्तरों पर विभाजित किया [7]:

1. **संवृति सत्य (Relative/Empirical Truth):** जो व्यावहारिक और लौकिक है, जिसे हम इंद्रियों और भाषा के माध्यम से ग्रहण करते हैं [7]।
2. **पारमार्थिक सत्य (Ultimate Truth):** जो अविद्या से मुक्त, अनुत्पन्न और अनिर्वचनीय शून्य है, जिसे वाणी या बुद्धि के द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता [7]।

अद्वैत वेदांत और माध्यमिक शून्यवाद में गहरा साम्य है, जहाँ व्यावहारिक जगत को माया या संवृत्ति माना गया है और पारमार्थिक स्तर पर अद्वैत या शून्यता को ही एकमात्र सत्य स्वीकार किया गया है [7]। अज्ञेय इन दोनों परंपराओं का एक अपूर्व समन्वय अपने काव्य में प्रस्तुत करते हैं [17]। वे बौद्ध शून्यता को केवल एक निषेधात्मक रिक्ति के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे अद्वैत वेदांत के सर्वव्यापी 'ब्रह्म' के समान एक सकारात्मक, प्रभामय और अनंत संभावनाओं से युक्त 'मौन' के रूप में ग्रहण करते हैं ।

३.२ बौद्ध 'अपोहवाद' (Apohavada) और अज्ञेय की भाषा-चेतना

बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा में 'अपोहवाद' (Theory of Exclusion) भाषा के संबंध में एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत करता है। इसके अनुसार, शब्द किसी वस्तु के सकारात्मक स्वरूप को सीधे अभिव्यक्त नहीं करते, बल्कि वे केवल

उसके विरोधी तत्वों का निषेध करते हैं। उदाहरणस्वरूप, जब हम 'गाय' शब्द का प्रयोग करते हैं, तो उसका वास्तविक अर्थ 'गाय-भिन्न सभी पशुओं का निषेध' (अ-गौ व्यावृत्ति) होता है। अज्ञेय का भाषा-दर्शन इस अपोहवादी निषेध से अत्यधिक प्रभावित है। वे अपनी कविताओं में शब्दों का चयन इस प्रकार करते हैं कि वे शब्द अपने वाच्यार्थ को छोड़कर अपनी सीमाओं को स्वीकार करें और पाठक को उस अपरिभाषित, अज्ञेय सत्य की ओर ले जाएं जो शब्दों के निषेध के बाद शेष बचता है [9]।
अज्ञेय का कुशीनगर (कसया) में जन्म होना—जो गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण स्थल है—उनके जीवन और चिंतन में बौद्ध दर्शन के गहरे प्रवेश का एक भौगोलिक और संवेदनात्मक प्रतीक भी है [2]। बौद्ध धर्म के 'जेन' (Zen) या ध्यान संप्रदाय और ताओवाद (Taoism) का प्रभाव उनकी रचना प्रक्रिया पर प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है, जहाँ शब्दों के स्थान पर मौन, सन्नाटा और सहज ध्यान को ही सत्य की साक्षात् अनुभूति का साधन माना गया है।

४. मौन की सैद्धांतिकी: वाचालता के संकट का अस्तित्ववादी प्रतिकार

४.१ आधुनिक वाचालता का संकट और संवेदन-न्यूनता

आधुनिक युग की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि संचार के साधनों की प्रचुरता ने मनुष्य को नितांत अकेला और वाचाल बना दिया है। इस वाचालता के कारण शब्दों का अवमूल्यन हुआ है। समाजशास्त्रीय और दार्शनिक दृष्टि से, अत्यधिक बोलना चिंतन की गहराई के अभाव को दर्शाता है [5]। डॉ. विकास दिव्यकीर्ति के अनुसार, *"अगर मुखरता वाचालता के स्तर को छूती हो और चिंतन की गहराई से वंचित हो तो वह व्यक्तित्व का सकारात्मक पक्ष न होकर एक वैयक्तिक और सामाजिक समस्या बन जाती है"* [5]।
अज्ञेय ने इस भाषाई और संवेदनात्मक पतन का कड़ा विरोध किया। आलोचक शंभुनाथ के शब्दों में, अज्ञेय के काव्य की यह बड़ी विडंबना रही है कि *"अज्ञेय के पास शब्द-भाषा का वन जितना आकर्षक व घना है, संवेदन-न्यूनता का सन्नाटा उससे भी अधिक घनघोर एवं त्रासद है"*। अज्ञेय ने महसूस किया कि इस उपभोक्तावादी शोरगुल में अपनी निजता, अपने अस्तित्व और अपनी वैयक्तिक प्रामाणिकता (Authenticity) को बचाने का एकमात्र उपाय 'मौन' और 'सन्नाटा' ही है [18]।

४.२ पाश्चात्य अस्तित्ववाद और सन्नाटे की घटनामीमांसा

अज्ञेय के मौन संबंधी चिंतन पर पाश्चात्य अस्तित्ववाद (Existentialism) के महान विचारकों—जैसे सोरेन कीर्केगार्द, मार्टिन हाइडेगर, और ज्याँ पॉल सार्त्र—का गहरा प्रभाव है। कीर्केगार्द ने मौन को व्यक्ति और परम सत्ता (Absolute) के बीच स्थापित होने वाले एक ऐसे इनकथनीय और आंतरिक संबंध के रूप में देखा था जिसे बाहरी सामाजिक कोलाहल नष्ट कर देता है। वहीं, हाइडेगर अपने दर्शन में मौन को 'Dasein' (मानव-अस्तित्व) के आत्म-साक्षात्कार और प्रामाणिक संवाद (Authentic Discourse) का मुख्य आधार मानते हैं।
अज्ञेय ने इन पाश्चात्य अस्तित्ववादी विचारों को भारतीय संदर्भों में ढालते हुए 'सन्नाटे' को एक रचनात्मक कैनवास के रूप में प्रयुक्त किया [8]। उनके लिए 'शून्य' या 'सन्नाटा' कोई निष्क्रिय रिक्त स्थान नहीं है। जैसा कि डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल ने रेखांकित किया है, अज्ञेय के यहाँ *"शून्य का अर्थ खाली नहीं होता, शून्य का मतलब होता है, इस स्थान को फिर से भरो"*।
अज्ञेय अपने जीवन के इसी सन्नाटे से सृजन के स्वर-तार चुनते हैं [21]:
"पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ,
उसी के लिए स्वर-तार चुनता हूँ..." [18]
यह सन्नाटा वास्तव में उस बाह्य अमानवीयता, यांत्रिकता और पूंजीवादी अलगाव के विरुद्ध एक दार्शनिक और कलात्मक प्रतिरोध है, जो व्यक्ति को उसकी आत्मा से काटकर एक भीड़ का हिस्सा बना देती है।

५. 'असाध्य वीणा' का दार्शनिक पुनरुत्पादन: अहंकार का शमन और मौन का विराट विन्यास

५.१ वज्रकीर्ति की साधना और किरीटी तरु का कॉस्मिक रूपक

अज्ञेय की कालजयी लंबी कविता 'असाध्य वीणा' (आंगन के पार द्वार, १९६१) मौन की सैद्धांतिकी और अपोफैटिक कला-प्रक्रिया का सर्वोत्कृष्ट रचनात्मक प्रमाण है। यह कविता जापानी विचारक काकुज़ो ओकाकुरा की पुस्तक 'द बुक ऑफ टी' (The Book of Tea) में संकलित चीनी लोककथा 'टेमिंग ऑफ द हार्प' (Taming of the Harp) पर आधारित है, जिसका अज्ञेय ने अत्यंत कुशलता से भारतीयकरण किया है।

कविता के केंद्र में 'वज्रकीर्ति' द्वारा निर्मित एक वीणा है, जिसे उसने एक प्राचीन, विशाल और अभिमंत्रित 'किरीटी-तरु' से अपने संपूर्ण जीवन की तपस्या के पश्चात गढ़ा था :

"वज्रकीर्ति ने मंत्रपूत जिस अति प्राचीन किरीटी-तरु से इसे गढ़ा था—
उसके कानों में हिम-शिखर रहस्य कहा करते थे अपने,
कंधों पर बादल सोते थे...
जड़ उसकी जा पहुँची थी पाताल-लोक..."

यहाँ 'किरीटी-तरु' केवल एक वृक्ष नहीं है, बल्कि वह भारतीय दर्शन के 'विराट पुरुष' या संपूर्ण कॉस्मिक सत्ता (Cosmic Reality) का एक भव्य रूपक है। इसकी जड़ें पाताल (मनुष्य के अवचेतन और अतीत की गहराई) में हैं और इसके कंधे बादलों (परम चेतना और अनंत आकाश) को छूते हैं। यह वृक्ष प्रकृति, समय, और अस्तित्व की अखंड एकता का प्रतीक है। वज्रकीर्ति की यह हठ-साधना कला की उस प्रक्रिया को दर्शाती है जो कलाकार के संपूर्ण जीवन की आहुति मांगती है।

५.२ वाचाल दर्प बनाम प्रियंवद का अपोफैटिक मौन

राजा की राजसभा में देश-विदेश के कई जाने-माने और अहंकारी कलावंत आते हैं, परंतु वे सभी वीणा को साधने में असफल रहते हैं; उनकी विद्या व्यर्थ हो जाती है और उनका दर्प चूर हो जाता है। वे असफल इसलिए होते हैं क्योंकि वे वीणा को अपनी कलात्मक श्रेष्ठता, वाचाल ज्ञान और तकनीकी आधिपत्य (Ego-driven domination) के माध्यम से 'जीतना' चाहते थे। वे वीणा के सम्मुख स्वयं को बड़ा साबित करने के प्रयास में लगे थे।

तभी सभा में केशकंबली, गुफा-गेह तपस्वी 'प्रियंवद' का आगमन होता है। प्रियंवद कोई पारंपरिक कलावंत नहीं है; वह स्वयं को विनम्रतापूर्वक केवल एक *"शिष्य, साधक और जीवन के अनकहे सत्य का साक्षी"* स्वीकार करता है। राजा के आग्रह पर जब वह वीणा को अपनी गोद में रखता है, तो वह तुरंत उसे बजाने की धृष्टता नहीं करता। इसके विपरीत, वह पूर्णतः मौन हो जाता है और वीणा पर अपना मस्तक टेक देता है। सभा चकित हो उठती है कि क्या प्रियंवद पराभूत होकर सो गया है? परंतु वास्तव में, उस स्पंदित सन्नाटे में प्रियंवद एक अत्यंत गूढ़ आध्यात्मिक प्रक्रिया से गुजर रहा था :

"पर उस स्पंदित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा—
नहीं, स्वयं अपने को शोध रहा था।"

प्रियंवद का यह मौन वास्तव में उसके 'व्यष्टि-विसर्जन' (Dissolution of the Individual Self) और 'अहंकार के पूर्ण शमन' की प्रक्रिया है। अपोफैटिक दर्शन और रहस्यवाद के सिद्धांतों के अनुसार, जब तक कर्ता (Subject) अपने 'अहं' को पूरी तरह शून्य नहीं कर देता, तब तक वह उस असीम सत्ता के संगीत को ग्रहण नहीं कर सकता। प्रियंवद स्वयं को किरीटी-तरु और उसके संपूर्ण प्राकृतिक परिवेश के प्रति समर्पित कर देता है। वह सोचता है कि कौन प्रियंवद है जो इस अभिमंत्रित कारुवाद्य के सम्मुख दंभ दिखाए? वह पुकार उठता है :

"मैं नहीं, नहीं! मैं कहीं नहीं!
ओ रे तरु! ओ वन!..."

प्रियंवद का यह पूर्ण समर्पण और शून्यता ही बौद्ध शून्यवाद का 'अनात्मन' (No-Self) और अद्वैत वेदांत का 'अहं ब्रह्मास्मि' (जहाँ 'मैं' विलीन हो जाता है और केवल 'सत्' शेष रहता है) का व्यावहारिक चरमोत्कर्ष है।

५.३ मौन से स्वर की रहस्यमयी यात्रा

जब प्रियंवद का अहं पूरी तरह विलीन हो जाता है, तो वह मौन वीणा के तारों से एकाकार हो जाता है। इस चरम शून्यता के बिंदु से अचानक वीणा बज उठती है और उससे एक ऐसा दिव्य, अभूतपूर्व स्वर प्रवाहित होता है जो पूरी सभा को चमत्कृत कर देता है। यह संगीत एक ही था, परंतु सभा में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी आंतरिक चेतना, जीवन-स्थिति और संवेदी सीमाओं के अनुसार अलग-अलग सुनाई दिया :

- राजा को लगा कि उसे अपनी मुकुट-मणि का वास्तविक दायित्व मिल गया है और उसका त्रिताप शांत हो गया है।
- रानी को लगा कि उसके गले का हार एकाएक सच्चा हो गया है और उसकी ईर्ष्या समाप्त हो गई है।
- किसी साधारण दरिद्र को उसमें *"बटुली में बहुत दिनों के बाद अन्न की सौंधी खुदबुद"* सुनाई दी।
- किसी नवविवाहिता को उसमें *"नयी वधू की सहमी सी पायल-ध्वनि"* सुनाई दी।

श्रोता (Audience)	संगीत की प्रतीकात्मक प्रतीति (Perceived Symbolism)	दार्शनिक स्तर (Philosophical Dimension)
राजा (Sovereign)	मुकुट का सच्चा दायित्व, कर्तव्यबोध, शांति	नैतिक और सांसारिक सत्ता का परिष्कार (संवृत्ति सत्य) [7]
रानी (Consort)	ईर्ष्या का शमन, सच्चे सुहाग का अहसास	वैयक्तिक राग और मानसिक ग्रंथियों का समाधान
दरिद्र (Poor Elector)	बटुली में अन्न की सौंधी महक	मूलभूत भौतिक और मानवीय जिजीविषा की तृप्ति
नववधू (Bride)	सहमी हुई पायल की सुरीली झंकार	कोमल प्रेम, यौन-चेतना और दांपत्य सौंदर्य का उन्मेष
साधक (Priyamvada)	विराट मौन, किरीटी-तरु का अखंड संवाद	पारमार्थिक सत्य, शून्यता और अद्वैत का साक्षात् [7]

यह बहुआयामी प्रतीति नागार्जुन के 'दो सत्यों' (संवृत्ति और पारमार्थिक) के सिद्धांत को पूर्णतः स्पष्ट करती है [7]। सभा के लोगों को जो विविध ध्वनियां सुनाई देती हैं, वह उनका अपना व्यावहारिक 'संवृत्ति सत्य' (Relative Truth) है, जो उनकी अपनी सांसारिक इच्छाओं से अनुकूलित है [7]। परंतु, प्रियंवद और वीणा के बीच जो अखंड, प्रशांत सन्नाटा स्थापित हुआ था, वह 'पारमार्थिक सत्य' (Absolute Truth) का मौन नाद था, जो भाषा और विकल्प से सर्वथा परे है [7]। प्रियंवद का यह चरित्र आधुनिक समाज की कृत्रिमता और अमानवीयता के विरुद्ध एक आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रतिरोध बन जाता है, जिसकी तुलना निर्मल वर्मा की कहानी 'कौव्वे और काला पानी' के पहाड़ी गुफा में रहने वाले विरक्त 'सहजी बाबा' से की जा सकती है।

६. "मौन भी अभिव्यंजना है": भाषा और कविता का घटनात्मक विखंडन

६.१ "जितना तुम्हारा सच है उतना ही कहो" की दार्शनिक ज़िद

अज्ञेय की कविता 'जितना तुम्हारा सच है' का पाठ्यपरक विश्लेषण उनके अपोफैटिक भाषा-दर्शन की व्यावहारिक और संवेदनात्मक बारीकियों को उजागर करता है [23]। अज्ञेय वाचालता और भाषा के अति-उपयोग के विरुद्ध एक नैतिक अनुशासन की माँग करते हैं:

"मौन भी अभिव्यंजना है :
जितना तुम्हारा सच है उतना ही कहो।" [23]

यह पंक्ति केवल एक साहित्यिक उक्ति नहीं है, बल्कि यह लेखक की वह दार्शनिक ज़िद है जो मानती है कि सत्य को अत्यधिक शब्दों के आडंबर में व्यक्त करने का प्रयास उसे असत्य की ओर ले जाता है । अज्ञेय के अनुसार, मनुष्य को केवल उतना ही बोलना चाहिए जितना उसने अपनी आत्मा के धरातल पर अनुभव किया हो [25]। यदि अनुभव अपूर्ण है, तो वहाँ चुप रहना ही सबसे अधिक श्रेयस्कर और प्रामाणिक कार्य है [25]।

६.२ नागर भाषा की साबुन जैसी चिकनाई और प्रकृति का नैतिक उपदेश

इसी कविता में अज्ञेय आधुनिक नागर जीवन के नागरिकों की कृत्रिम और हृदयहीन भाषा पर तीखा प्रहार करते हैं [27]:

"...नहीं सुनें हम वह नगरी के नागरिकों से
जिनकी भाषा में अतिशय चिकनाई है साबुन की
किंतु नहीं है करुणा..." [27]

नगरीय नागरिकों की यह 'साबुन जैसी चिकनी भाषा' वास्तव में उस पूंजीवादी चालाकी और औपचारिक शिष्टता का प्रतीक है, जो बाहर से तो अत्यंत आकर्षक दिखाई देती है, परंतु भीतर से पूरी तरह संवेदनाशून्य और करुणाहीन होती है [20]। इसके विरुद्ध, अज्ञेय प्रकृति के सान्निध्य में उस अपोफैटिक मौन को सीखने का आग्रह करते हैं जहाँ अहंकार का पूर्ण समर्पण हो जाता है [24]:

"कहा नदी ने भी : नहीं, मत बोलो,
तुम्हारी आँखों की ज्योति से अधिक है चौंध जिस रूप की
उस का अवगुंठन मत खोलो..." [24]

नदी का यह कथन मनुष्य की देखने और व्याख्या करने की आक्रामक बौद्धिक चेष्टा पर रोक लगाता है [24]। वह कहता है कि सत्य को अपनी बौद्धिक 'दीठ से टोह' कर मत जानो, बल्कि अपने 'मन के उन्मेष' से उसे अनुभव करो; उसे अपनी मुट्ठी में पकड़ने का प्रयास मत करो, बल्कि स्वयं उसके प्रवाह में समर्पित होकर 'उसी के हो लो' [23]।

इसी प्रकार, आकाश भी मनुष्य की वाचालता और परिभाषाएं गढ़ने की होड़ पर अंकुश लगाता है [24]:

"कहा आकाश ने भी : नहीं, शब्द मत चाहो
दाता की स्पर्धा हो जहाँ, मन होता है मँगते का।
दे सकते हैं वही जो चुप, झुक कर ले लेते हैं।" [23]

यह अद्भुत दार्शनिक अंतरदृष्टि है, जो यह प्रतिपादित करती है कि जब मनुष्य प्रकृति या सत्य के सम्मुख 'दाता' (सब कुछ जान लेने और व्याख्या करने वाला ज्ञाता) बनने की स्पर्धा करता है, तो उसका मन वास्तव में संकीर्ण और अहंकारी हो जाता है [24]। इसके विपरीत, जो साधक मौन रहकर, अपने अहं को झुकाकर, उस परम सत्य को विनम्रतापूर्वक ग्रहण करता है, वही वास्तव में संसार को कुछ सच्चा और शाश्वत स्वर दे पाने में समर्थ होता है [23]। यह समर्पण भाव ही अज्ञेय के जीवन-दर्शन की केंद्रीय रीढ़ है ।

७. क्षण, सन्नाटा और समय का घटनात्मक दर्शन

७.१ अज्ञेय का क्षणवाद (Philosophy of Moment)

मौन की सैद्धांतिकी अज्ञेय के 'क्षणवाद' (Philosophy of Moment) और उनके 'समय दर्शन' (Phenomenology of Time) से अत्यंत घनिष्ठ रूप से संबद्ध है। अज्ञेय समय को कोई निर्जीव, रेखीय (Linear) या केवल बीतती हुई नश्वर इकाई नहीं मानते। उनके लिए प्रत्येक क्षण शाश्वत समय की विराट धारा का एक जीवंत और अखंड कण है। अज्ञेयवादी क्षण वह अद्वितीय बिंदु है जहाँ अतीत की स्मृतियाँ और भविष्य की कल्पनाएँ विलीन हो जाती हैं और केवल 'वर्तमान' का सत्य अपने पूर्ण दीप्तिमान रूप में साक्षात् होता है।

कवि के शब्दों में:

"एक क्षण! होने का, अस्तित्व का अजर अद्वितीय क्षण,
हो के सत्य, सत्य के साक्षात का..."

अज्ञेय का यह क्षणवाद बौद्ध धर्म के 'क्षणिकवाद' [28] और पाश्चात्य दार्शनिकों जैसे मार्टिन हाइडेगर के समय-दर्शन (*Sein und Zeit*) का एक मौलिक संश्लेषण है [8]। वे मानते हैं कि जीवन की वास्तविक सार्थकता और सत्य की प्राप्ति किसी लंबे कालखंड में नहीं, बल्कि किसी एक विशिष्ट, तीव्र और अत्यंत प्रामाणिक क्षण में ही संभव होती है [28]।

७.२ क्षण में बद्ध अमरता और मौन का संबंध

अज्ञेय के अनुसार, जब कोई मनुष्य प्रेम, तीव्र वेदना या सृजन के क्षण को पूरी सघनता और मौन के साथ जीता है, तो वह क्षण मृत्यु के भय को स्थगित कर देता है और अमरता का स्पर्श कर लेता है। उनकी प्रसिद्ध कविता *"उड़ चल हारिल"* में हारिल पक्षी की उन्मुक्त उड़ान का वह अनूठा क्षण इसी सत्य को उद्घाटित करता है :

"...क्षण में बद्ध अमरता छुई।"

यहाँ 'मौन' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उस अद्वितीय क्षण की गहनता को व्यक्त करने के लिए यदि हम तत्परता से शब्दों का प्रयोग करेंगे, तो वह क्षण बिखर जाएगा। मौन ही वह सुरक्षा-कवच है जो उस अमूल्य क्षण की सघनता को आत्मा के भीतर सुरक्षित रखता है। कला और सृजन की प्रक्रिया (Creative Process) में भी अज्ञेय सर्जना के क्षणों को अत्यंत तीव्र और निर्मम मानते हैं, जिसकी तुलना वे स्वाती नक्षत्र की उस बूँद से करते हैं जो सीप के मर्म को बेधकर मोती का निर्माण करती है :

"लंबे सृजना के क्षण कभी हो नहीं सकते।
बूंद स्वाती की भले हो
बोधती है मर्म सीपी का उसी निर्मम
त्वरा से..."

अज्ञेय ने अपने निबंध संग्रह *'आत्मनेपद'* में स्पष्ट किया कि सृजन का वह क्षण कवि-मन को बेधकर मौन हो जाता है, और फिर वह कविता अवचेतन की गहराइयों में पकती रहती है और सही समय आने पर स्वतः ही अंकुर की भाँति प्रस्फुटित होती है। इस प्रकार, अज्ञेय के यहाँ मौन और क्षण परस्पर गुंथे हुए हैं, जो मनुष्य को समय के कोलाहल से मुक्त कर शाश्वत सौंदर्य से जोड़ते हैं।

८. विमर्श और अकादमिक निष्कर्ष

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के रचना-संसार का यह व्यापक दार्शनिक विश्लेषण यह स्थापित करता है कि अज्ञेय हिंदी साहित्य के केवल एक प्रयोगधर्मी या आधुनिकतावादी रचनाकार मात्र नहीं थे, बल्कि वे हिंदी भाषा और काव्य के एक महानतम दार्शनिक सत्यान्वेषी थे [17]। उनकी 'मौन की सैद्धांतिकी' और 'अपोफैटिक भाषा-दर्शन' समकालीन कोलाहल, अर्थहीन वाचालता और संवेदन-न्यूनता के विरुद्ध एक अत्यंत सुव्यवस्थित और सशक्त दार्शनिक प्रतिरोध प्रस्तुत करते हैं।

अज्ञेय ने यह भली-भांति प्रमाणित किया कि भाषा की सार्थकता केवल उसके बोलने में नहीं, बल्कि उसके मौन होने की क्षमता में निहित है [3]। जब शब्द अपने वाच्यार्थ और अहंकार को विसर्जित कर देते हैं, तभी उस अखंड, अतीन्द्रिय और पारमार्थिक सत्य की प्रतीति होती है जिसे उपनिषदों ने 'नेति-नेति' और नागार्जुन ने 'शून्यता' कहा है [7]। अज्ञेय की 'असाध्य

वीणा' इस दार्शनिक विसर्ज़न और शून्यता से उपजे महा-संगीत का अमर काव्यात्मक दस्तावेज़ है, जो यह दिखाता है कि कला की चरम परिणति केवल 'अहं' के पूर्ण शमन से ही संभव है ।

वर्तमान समय में, जहाँ मानव जीवन कृत्रिम यांत्रिकता, डिजिटल कोलाहल और विज्ञापनी शोर से निरंतर खंडित हो रहा है, अज्ञेय का यह मौन-दर्शन और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है [1]। अज्ञेय हमें यह सिखाते हैं कि अत्यधिक मुखर होना बुद्धि या परिपक्वता का लक्षण नहीं है, बल्कि एकांत में अपने 'स्व' के साथ संवाद करना और जीवन के क्षणों को पूरी प्रामाणिकता व मौन के साथ जीना ही मनुष्य होने की वास्तविक पहचान है [26]। अज्ञेय का अपोफैटिक भाषा-दर्शन अंततः यह सिद्ध करता है कि 'न कहना' या 'मौन रहना' ही सब कुछ 'कह देने' का सर्वोच्च, गहनतम और सबसे प्रामाणिक मानवीय काव्य-शिल्प है [30]।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन। (१९६१)। *आँगन के पार द्वार*। इलाहाबाद: किताब महल ।
2. अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन। (१९४९)। *हरी घास पर क्षण भर*। भारतीय ज्ञानपीठ ।
3. अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन। (१९६०)। *आत्मनेपद*। भारतीय ज्ञानपीठ [28]।
4. शर्मा, रामविलास। (१९८०)। *नई कविता और अस्तित्ववाद*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन [31]।
5. सिंह, नामवर। (१९९१)। *कविता के नए प्रतिमान*। दिल्ली: राजकमल प्रकाशन [31]।
6. पालीवाल, कृष्णदत्त। (२००९)। *अज्ञेय के रचना कर्म का मौन*। नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस ।
7. दिव्यकीर्ति, विकास। (२०२१)। *"क्योंकि मौन भी एक तरह की अभिव्यक्ति है"*। *दृष्टि आई.ए.एस. ब्लॉग* [26]।
8. नागार्जुन। *मूलमाध्यमिककारिका*। (अध्याय २४, कारिका ८-९ के संदर्भ में संवृत्ति और परमार्थ सत्य मीमांसा) [7]।
9. शंकराचार्य, आदि। *ब्रह्मसूत्रभाष्य*। (अद्वैत वेदांत और 'अहं ब्रह्मास्मि' सिद्धांत मीमांसा) [10]।
10. विट्गेन्स्टाइन, लुडविग। (१९२२)। *Tractatus Logico-Philosophicus*। लंदन: रूटलेज ।
11. देरिदा, जाक। (१९८७)। *Psyche: Inventions of the Other*। शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस ।
12. कीर्केगार्द, सोरेन। (१८४३)। *Fear and Trembling*। कोपेनहेगन ।
13. ओकाकुरा, काकुज़ो। (१९०६)। *The Book of Tea*। न्यूयॉर्क ।
14. ओशो। (प्रवचन)। *नेति-नेति: सत्य की खोज* [32]।
15. आचार्य, नंदकिशोर। (२००४)। *अज्ञेय की काव्य-चेतना*। बीकानेर [13]।
16. वाजपेयी, उदयन। (२००४)। *अज्ञेय: आधुनिकता के कवि* [8]।
17. तिवारी, के. (२०१६)। *अज्ञेय का काव्य: एक मूल्यांकन* (शोध प्रबंध) [21]।
18. श्रीवास्तव, राकेश कुमार। (२०१०)। *अज्ञेय के उपन्यासों में अस्तित्ववाद और मनोविश्लेषण* [8]।

Works cited

1. अज्ञेय के कथा साहित्य में व्यक्तिवाद और अस्तित्ववादी - IJAIDR, accessed on May 27, 2026, https://www.ijaidr.com/papers/2013/2/1391.pdf
2. अज्ञेय के काव्य में अस्तित्ववाद, accessed on May 27, 2026, https://ignited.in/index.php/jasrae/article/download/4837/9469/23669
3. अज्ञेय का काव्य: विचार एवं दृष्टि - Goa University, accessed on May 27, 2026, http://irgu.unigoa.ac.in/drs/bitstream/handle/unigoa/5156/tiwari_k_2016.pdf?sequence=1&isAllowed=y
4. आधुनिक हिंदी कविता, accessed on May 27, 2026, https://maaomwati.com/uploads/notes/1761551363_%20%E0%A4%B9%E0%A4%

BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%80%20%E0%A4%95%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A4%BE-2%20(MC)MA%20HINDI%202ND%20SEM.pdf

5. अज्ञेय के काव्य शिल्प, accessed on May 27, 2026, https://www.durgacollege.in/iqac/%E0%A4%85%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%9E%E0%A5%87%E0%A4%AF%20%E0%A4%95%E0%A5%87%20%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A5%8D%E0%A4%AF%20%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%AA.pdf
6. Microsoft Word - Research Journal- _March 2012_.doc, accessed on May 27, 2026, http://navjyot.net/wp-content/uploads/2014/02/98-1021.pdf
7. Article 324: Superintendence, direction and control of elections to be vested in an Election Commission - Constitution of India, accessed on May 27, 2026, https://www.constitutionofindia.net/articles/article-324-superintendence-direction-and-control-of-elections-to-be-vested-in-an-election-commission/
8. Blockchain-Based E-Voting Mechanisms: A Survey and a Proposal - MDPI, accessed on May 27, 2026, https://www.mdpi.com/2673-8732/4/4/21
9. Going from bad to worse: from Internet voting to blockchain voting | Journal of Cybersecurity, accessed on May 27, 2026, https://academic.oup.com/cybersecurity/article/7/1/tyaa025/6137886
10. Election Commission working with IIT-Madras on e-voting - The Hindu, accessed on May 27, 2026, https://www.thehindu.com/news/national/election-commission-working-with-iit-madras-on-e-voting/article34170161.ece
11. अज्ञेय का मूल नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन है। उन्होंने - NCERT, accessed on May 27, 2026, https://ncert.nic.in/textbook/pdf/lhat103.pdf
12. अज्ञेय के काव्य में व्यक्ति और समाज - Social Research Foundation, accessed on May 27, 2026, https://socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=8934
13. GOVERNMENT OF INDIA MINISTRY OF LAW AND JUSTICE LEGISLATIVE DEPARTMENT LOK SABHA UNSTARRED QUESTION NO. 272 TO BE ANSWERED ON FR, accessed on May 27, 2026, https://sansad.in/getFile/loksabhaquestions/annex/1711/AU272.pdf?source=pqals
14. Going from Bad to Worse: From Internet Voting to Blockchain Voting - Semantic Scholar, accessed on May 27, 2026, https://pdfs.semanticscholar.org/d60e/045731228b1118918cbd8cc41f2e19ac143f.pdf
15. अपने अपने अजनबी - विकिपीडिया, accessed on May 27, 2026, https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A5%87_%E0%A4%85%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A5%87_%E0%A4%85%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A4%AC%E0%A5%80
16. अद्वैत ब्रह्म और बुद्धवादी शून्यता : r/Buddhism - Reddit, accessed on May 27, 2026, https://www.reddit.com/r/Buddhism/comments/1rufl2n/advaitic_brahman_and_buddhist_shunyata/?tl=hi

17. Independent Report on E-voting in Estonia | A security analysis of Estonia's Internet voting system by international e-voting experts., accessed on May 27, 2026, https://estoniaevoting.org/
18. Meta-analysis of blockchain-powered electronic voting systems - MATEC Web of Conferences, accessed on May 27, 2026, https://www.matec-conferences.org/articles/matecconf/pdf/2024/04/matecconf_icmed2024_01076.pdf
19. हिंदी काव्य में अस्तित्ववाद का प्रभाव अज्ञेय एवं मोहन राकेश के - JETIR.org, accessed on May 27, 2026, https://www.jetir.org/papers/JETIR2201429.pdf
20. शंभुनाथ अज्ञेय : वैकल्पिक आधुनिकता के कवि आलोचना - हिंदी समय, accessed on May 27, 2026, https://www.hindisamay.com/content/6323/1/%E0%A4%B6%E0%A4%82%E0%A4%AD%E0%A5%81%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A5-%E0%A4%86%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%BE-%E0%A4%85%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%9E%E0%A5%87%E0%A4%AF-%E0%A4%B5%E0%A5%88%E0%A4%95%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%AA%E0%A4%BF%E0%A4%95-%E0%A4%86%E0%A4%A7%E0%A5%81%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%A4%E0%A4%BE-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%95%E0%A4%B5%E0%A4%BF.cspx
21. Security Analysis of the Estonian Internet Voting System - J. Alex Halderman, accessed on May 27, 2026, https://jhalderm.com/pub/papers/ivoting-ccs14.pdf
22. बौद्ध दर्शन : स्वरूप, परम्परा एवं प्रमुख सिद्धांत - eGyanKosh, accessed on May 27, 2026, https://www.egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/120242/1/Unit-32.pdf
23. Remote EVM ready to help migrants vote outside States: ECI - GS SCORE, accessed on May 27, 2026, https://iasscore.in/current-affairs/remote-evm-ready-to-help-migrants-vote-outside-states-eci
24. Webinar Organised On Technology Aspects of Remote Voting - PIB, accessed on May 27, 2026, https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1645063
25. Electronic Voting Machine - INTERNATIONAL JOURNAL OF LAW MANAGEMENT & HUMANITIES, accessed on May 27, 2026, https://ijlmh.com/wp-content/uploads/Electronic-Voting-Machine-Constitutional-Examination.pdf
26. Going from bad to worse: from Internet voting to blockchain voting, accessed on May 27, 2026, https://www.dci.mit.edu/projects/going-from-bad-to-worse-from-internet-voting-to-blockchain-voting
27. What is Advaita Vedanta Philosophy? (Kya Hai Advaita Vedanta?) | Hindi - YouTube, accessed on May 27, 2026, https://www.youtube.com/watch?v=HRCng92Oq-c
28. Emerging Technologies – Invest Telangana, accessed on May 27, 2026, https://invest.telangana.gov.in/emerging-technologies/
29. TS develops smartphone based e-voting solution - The Hindu, accessed on May

27, 2026, https://www.thehindu.com/news/national/telangana/ts-develops-smartphone-based-e-voting-solution/article36865780.ece

30. बहुमुखी प्रतिभा के धनीः अज्ञेय, accessed on May 27, 2026, https://www.allresearchjournal.com/archives/2016/vol2issue2/PartL/6-9-118-324.pdf
31. A Scalable and Verifiable Blockchain-Based E-Voting Framework for Transparent, Secure and User-Centric Democratic - SciTePress, accessed on May 27, 2026, https://www.scitepress.org/Papers/2025/139318/139318.pdf
32. AC Jose vs Sivan Pillai & Ors on 5 March, 1984 - State Election Commission, Maharashtra, accessed on May 27, 2026, https://mahasec.maharashtra.gov.in/Upload/PDF/3%20A%20C%20Jose.pdf
33. Election Commission of India working on remote voting system - The Hindu, accessed on May 27, 2026, https://www.thehindu.com/news/national/system-to-enable-electors-to-cast-votes-from-anywhere-in-the-works/article30836003.ece